शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिन्दी ब्लॉग जगत में महिलाओं का अवदान

गायत्री शर्मा (शोधार्थी)
हिन्दी अध्ययनशाला
विक्रम विश्वविद्यालय
उज्जैन, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

संचार क्रांति ने आमजन को अनेक सहूलियतें प्रदान की हैं। पहले जहां विचारों की अभिव्यक्ति के लिए सीमित माध्यम उपलब्ध थे। खासकर प्रिंट मीडिया की अपनी सीमायें थीं। वहीं आज ऐसे अनेक माध्यम मौजूद हैं जिनका उपयोग कर अपने विचार और जानकारियों को अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में साझा कर सकते हैं। इन्टरनेट पर उपलब्ध उपकरण ब्लॉग एक ऐसा ही माध्यम है। इसे हिंदी में चिटठा नाम दिया गया है परन्तु बोलचाल की भाषा में ब्लॉग ही अधिक प्रचलित है। हिंदी में ब्लॉग लेखन ने अपना पृथक स्थान बनाया है अनेक लेखक और लेखिकाएं इसका उपयोग बखूबी कर रही हैं। पुरुषों के समान महिलायें भी ब्लॉग लेखन में पीछे नहीं हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी ब्लॉग जगत में महिलाओं के अवदान की चर्चा की गयी है।

प्रस्तावना

हिन्दी ब्लॉग लेखन विधा ने भारतीय समाज की सभी वर्ग की महिलाओं को वाणी प्रदान की है। ब्लॉग लेखन के माध्यम से अब पुरूषों की तरह महिला ब्लॉगर भी अपनी रचनाधर्मिता का प्रदर्शन कर राजनीति, पत्रकारिता, साहित्य, यात्रा, सामाजिक सरोकार आदि विषयों पर खुलकर अपने विचार व्यक्त कर रही हैं। महिलाओं को स्वतंत्र रूप से दुनिया के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत करने का जो मंच हिन्दी ब्लॉग ने प्रदान किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

ब्लॉग भावना और विचार अभिव्यक्ति की वह अधुनातन विधा है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने आप को पूर्ण स्वतंत्रता के साथ प्रस्तुत कर सकता है। इंटरनेट के माध्यम से समूचे विश्व के जनसमुदाय को जोड़ने वाले ब्लॉग से आज समाज का कोई भी वर्ग अछूता नहीं है। अभिव्यक्ति के इस स्वतंत्र मंच पर जहाँ नन्हें बच्चों की किलकारियाँ हैं तो वहीं युवाओं की नई सोच भी है। यहाँ बुजुर्गों के अनुभवों के किस्से हैं, वहीं महिलाओं की कलात्मकता व रचनात्मकता से सजा कोना भी है। जाति, धर्म व भाषागत बंधनों से ऊपर उठकर समाज के हर वर्ग के जोड़ते हुए ब्लॉग ने आम आदमी से लेकर खास आदमी तक की अभिव्यक्ति को निष्पक्ष व मौलिक रूप में प्रसारित करने में अपनी महती भूमिका निभाई है।

ब्लॉग ने महिलाओं को सर्वाधिक आकर्षित किया है। डायरी के पन्नों में अपनी मुस्कुराहटों की तितलियों और दर्द की सिसकियों के अंधेरों को वर्षों तक सहेजकर रखने वाली महिलाएँ अब आनलाईन डायरी के पन्नों पर अपने जीवन के किस्सों-कहानियों को खुलकर अभिव्यक्त कर रही हैं। हिन्दी ब्लॉग लेखन से जुड़कर स्त्री विमर्श के स्वर पहले से अधिक मुखरित हुए हैं। साहित्य लेखन में भाषा व व्याकरण के कड़े कायदे-कानून

होते हैं किंतु ब्लॉग लेखन की भाषा व्याकरण की क्लिष्टता से परे लेखक के भावों व विषय के अनुरूप मिश्रित, स्वकीय प्रयोगपरक, आम बोलचाल की भाषा आदि रूपों में ढलती है। यही वजह है कि ब्लॉग लेखन की इस नूतन विधा को अपनाने वाली महिलाओं में समाज की शिक्षित महिलाओं से लेकर आम गृहिणियाँ व ग्रामीण महिलाएँ भी शामिल हैं। यह हिन्दी ब्लॉग लेखन की बढ़ती लोकप्रियता का ही परिणाम है कि आज समाज के सभी वर्गों की महिलाएँ हिन्दी ब्लॉग पर अपने अनुभवों, विचारों व प्रतिभा का प्रदर्शन कर ब्लॉग जगत में अपनी प्रमुख उपस्थिति दर्ज करा रही हैं।

हिंदी ब्लॉग में महिलाओं का योगदान

हिन्दी ब्लॉग लेखन के इतिहास का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि 21 अप्रैल 2003 को आलोक कुमार द्वारा 'नौ दो ग्यारह' नाम से हिन्दी का पहला ब्लॉग बनाए जाने के बाद से ही भले ही किसी और ने इसकी उपयोगिता को समझा हो अथवा नहीं लेकिन हिन्दी की महिला लेखिकाओं ने इसकी पहुँच को समझने और भुनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। यही कारण है कि अब हिन्दी की सफल महिला ब्लॉगरों की सूची दिन-प्रतिदिन तेजी से बढ़ रही है, जो महिला जागरूकता का एक शुभ संकेत है, क्योंकि सामान्य तौर पर महिलाएँ अपने संकोची स्वभाव व समाज की उनके प्रति निम्न सोच के कारण अपने घर-परिवार में भी खुलकर अपने पक्ष को प्रस्तुत नहीं कर पाती हैं। ऐसे में महिलाओं की कला, प्रतिभा व रचनात्मकता उनके भीतर ही कैद रहकर समाप्त हो जाती है। वर्तमान में हिन्दी ब्लॉगों ने महिलाओं को अभिव्यक्ति की आजादी देकर माउस के एक क्लिक पर घर बैठे ही उन्हें समूची दुनिया से जोड़ दिया है। हिन्दी ब्लॉगों की व्यापक दुनिया में आनलाईन डायरी के रूप में महिला ब्लॉगरों की जिंदगी व अनुभवों की डायरी खुले रूप में प्रस्तुत है, जिसके पन्नों को पलटते हुए पाठक उस महिला की शख्सियत से रूबरू हो सकते हैं, जो कल तक रसोई में भोजन पकाते हुए अपनी चूड़ियों की खनक के साथ ही प्रेम की मिठास डालकर स्वादिष्ट भोजन पकाती थी। आज वही महिलाएँ अपने घर व बाहर का कामकाज संभालने के साथ ही हिन्दी ब्लॉगिंग की दुनिया में अपनी जिम्मेदार व सक्रिय भूमिका भी निभा रही हैं। यही नहीं भारतीय महिलाओं के व्यंजनों की खुशबू अब उनके ब्लॉग के माध्यम से कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक व अमेरिका से लेकर अफ्रीका तक चारों ओर फैल रही है। साहित्य जगत में अब हिन्दी महिला ब्लॉगरों की सुंदर रचनाओं की प्रशंसा की जाती है। महिलाओं के प्रति निम्न सोच रखने वाली व उन पर अत्याचार करने वाली महिलाओं की आलोचना भी की जाती है।

ब्लॉग लेखन के क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती उत्सुकता को देखकर यह कहा जा सकता है कि हिन्दी ब्लॉग लेखन से जुड़कर महिलाएँ अपने विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान कर रही हैं। नारी शोषण के मुद्दों पर अपनी लेखनी की तीखी धार से समाज के उन लोगों को करारा जवाब दे रही है, जो महिलाओं को कमजोर व अबला समझकर उन पर अन्याय व अत्याचार करने की भूल करते हैं।

कुछ लोगों के लिए यह सूचना आश्चर्यजनक हो सकती है कि हिन्दी में लिखे जाने वाले ब्लॉगों में सर्वाधिक ट्राफिक पाने वालों में ही नहीं अपितु सर्वाधिक टिप्पणियाँ पाने वालों में भी महिलाओं की संख्या पिछले कुछ वर्षों में आश्चर्यजनक ढंग

से बढ़ी है। हिन्दी ब्लॉग लेखन में सक्रिय महिलाओं के ब्लॉग का गहराई से निरीक्षण करने पर यह ज्ञात होता है कि उनकी दुनिया अब सिर्फ चौका-चूल्हा, सास-बहू के किस्सों अथवा स्वेटर की डिजाइन तक ही सीमित नहीं रही है। बेशक उनकी लेखनी में संवेदनाओं, मानवीय संबंधों और स्त्री पीड़ा को सर्वाधिक स्थान मिला है, लेकिन आज वे विषयगत विविधता के स्तर पर न तो किसी से पीछे है और न ही पिछड़ी हुई है। वे अपने आसपास के समाज को गहराई से निरख रही है, समकालीन राजनीति की सूक्ष्मता को परख रही है और विज्ञान, तकनीक, भाषा तथा सामुदायिक विद्रुपताओं पर भी अपने वक्तव्य ब्लॉग लेखन के माध्यम से खुले मन से प्रस्तुत कर रही हैं।

नारी मुक्ति के साथ ही राजनीति, साहित्य, यात्रा, ज्योतिष, मनोरंजन, समसामयिक मुद्दों आदि विषयों पर लेखन करने वाली हिन्दी की महिला ब्लॉगरों में सुजाता, रचना, पूर्णिमा बर्मन, आरधना चतुर्वेदी, अल्पना वर्मा, आकांक्षा यादव, रंजना भाटिया, वंदना गुप्ता, रश्मिप्रभा, हरकीरत हीर, नीलिमा, शिखा वार्ष्णेय, रेखा श्रीवास्तव, रचना त्रिपाठी, अनिता कुमार, डॉ. कविता वाचक्नवी, किरण मिश्रा, फिरदौस खान, शैफाली पांडे, उषा राय, मनविंदर, घुघुती बासूती, सुखीजा अरोरा, आर अनुराधा, अजित गुप्ता, आदि प्रमुख नाम हैं। पूर्ण निष्ठा, समर्पण व सकारात्मक सोच के साथ अपनी रचनाधर्मिता व कलात्मकता का प्रदर्शन कर ये महिला ब्लॉग र हिन्दी ब्लॉगों की विश्वव्यापी दुनिया में अपनी एक अलग अमिट छाप छोड़ रही है। मौजूदा दौर में हिन्दी ब्लॉग स्त्री आंदोलन, स्त्री विमर्श, महिला सशक्तिकरण और नारी स्वातंत्र्य के प्रमुख हथियार के रूप में उभरकर सामने आया है। हिन्दी ब्लॉगों के इस विशाल मंच पर महिलाओं की उपलब्धि भी है, कमजोरी भी है और बदलते दौर में उसकी बदलती भूमिका भी है।

हिंदी के उत्कृष्ट ब्लॉग

हिन्दी के उत्कृष्ट महिला ब्लॉगों में नारी, टूटी-फूटी, मेरे अनुभव, व्योम के पार, इंद्रधनुष, फिरदौस की डायरी, मेरा सरोकार, प्रत्यक्षा, बेदखल की डायरी, मेरी आत्मस्वीकृतियाँ, अजित गुप्ता का कोना आदि प्रमुख हैं। हिन्दी ब्लॉग जगत में दस्तक देने वाली पहली महिला ब्लॉगर होने का श्रेय इंदौर की पद्मजा को जाता है। पद्मजा ने वर्ष 2003 में 'कही अनकही' ब्लॉग के माध्यम से हिन्दी ब्लॉग लेखन की शुरूआत की थी। इस पहली महिला ब्लॉगर से प्रेरित होकर कई अन्य महिलाओं ने भी ब्लॉग लेखन विधा को अपनाते हुए अपने व्यक्तित्व को और अधिक प्रभावी व आकर्षक बनाया है। वर्तमान में हजारों की संख्या में महिला ब्लॉगर ब्लॉग लेखन के मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं।

हिन्दी ब्लॉग जगत में प्रत्येक महिला ब्लॉगर का अपना अनूठा अंदाज व अपनी विशिष्ट प्रस्तुति है। यहाँ उनके अनुभव, अहसास, शब्द आदि के विविध रूप नजर आते हैं। वर्तमान में 'चोखेरबाली' और 'नारी' जैसे सामुदायिक ब्लॉगों पर महिलाओं संबंधी मुद्दों पर सार्थक चर्चा छेड़ी जा रही है। 'चोखेरबाली' ब्लॉग महिलाओं संबंधी मुद्दों पर केंद्रित हिन्दी का पहला सामुदायिक ब्लॉग है, जिसे फरवरी 2008 में सुजाता तेवतिया और रचना सिंह ने मिलकर आरंभ किया था। इस ब्लॉग की भूमिका ब्लॉग के आरंभ की कहानी को कुछ इस प्रकार से व्यक्त करती है- 'धूल तब तक स्तुत्य है, जब तक पैरों तले दबी है, उड़ने लगे, आँधी बन जाए... तो आँख की किरकिरी है, चोखेरबाली है।' नारीवादी विमर्श को

प्रखरता से प्रस्तुत करने के चलते कम समय में ही इस ब्लॉग के अनुसरणकर्ताओं की संख्या अत्यधिक हो गई। वर्ष 2008 में ही 'चोखेरबाली' की ब्लॉगर रचना सिंह ने अपना एक और सामुदायिक ब्लॉग' नारी' आरंभ किया। हिन्दी भाषा में लिखा जाने वाला यह ब्लॉग महिलाओं की लेखनी के तीक्ष्ण स्वरों व धारदार टिप्पणियों के लिए आज भी ब्लॉग जगत में मशहूर है। नारी स्वातंत्र्य के स्वरों को प्रमुखता से आवाज देने वाले इस ब्लॉग की भूमिका में ही लिखा गया है- 'जिसने घुटन से अपनी आजादी खुद अर्जित की, एक कोशिश नारी को 'जगाने की' एक आवाहन कि नारी और नर को समान अधिकार है और लिंगभेद के आधार पर किया हुआ अधिकारों का बँटवारा गलत है और अब गैरकानूनी और असंवैधानिक भी। बँटवारा केवल क्षमता आधारित सही होता है।'

महिलाओं संबंधी मुद्दों पर केंद्रित हिन्दी का एक और प्रमुख ब्लॉग आराधना चतुर्वेदी का ब्लॉग' नारीवादी बहस' है। इस ब्लॉग की भूमिका में यह महिला ब्लॉगर अपने पाठकों से संवाद की शुरूआत इस प्रकार करती है- 'कुछ खास नहीं, बस नारी होने के नाते जो झेला और महसूस किया उसे शब्दों में ढालने का प्रयास कर रही हूँ। चाह है, दुनिया औरतों के लिए बेहतर और सुरक्षित बने।' ब्लॉग जगत में सक्रिय एक और नारीवादी विचारधारा वाली हिन्दी की महिला ब्लॉगर सोनिया गौर अपने ब्लॉग 'औरत की डायरी' में लिखती हैं- 'एक औरत, जो सनातन है, रोज गुजर रही है कार्बन डेटिंग से वह औरत खयाल नही सोचती। बस बातें करती है चीकट दीवारों से, बेबस झड़ती पपड़ियों के बीच लटके बरसों पुराने कैलेंडर में अंतहीन उड़ान भरते पक्षियों से और हाँ, बेमकसद बने मकड़ियों के जालों से भी। उसी औरत की डायरी के पन्ने खंगालकर लाई है मेरी कलम, जो आप सबको नज़र है।'

समाज की पल-पल की घटनाओं को संजीदगी से देखते हुए उन पर त्वरित अपनी प्रतिक्रियाएँ प्रस्तुत करने में हिन्दी की महिला ब्लॉगरों की भूमिका महत्वपूर्ण है और जब मुद्दा महिलाओं पर अत्याचार से संबंधित हो तो ये महिला ब्लॉगर अपराधियों को सवालों के कटघरे में खड़ा कर समाज को यह दिखा देती है कि वह महिलाओं को कमजोर समझने की भूल कभी न करे। देश में बहुचर्चित निर्भया सामूहिक बलात्कार प्रकरण पर अनिता शर्मा अपने मन की पीड़ा को अपनी ब्लॉग पोस्ट में इन शब्दों में अभिव्यक्ति देती है- 'हर संत का एक इतिहास होता है और हर अपराधी का एक भविष्य लेकिन इस वाक्य में अपराध के शिकार व्यक्ति का कहीं भी जिक्र नहीं है। उसका क्या इतिहास या भविष्य होगा इसके बारे में कुछ नहीं बताया गया है। जब निर्भया केस सामने आया, मैं सात महीने की प्रेगनेंट थी। मन में आया कि चौराहे पर खड़ी हो जाऊँ और खुद पर लिख दूँ- ऐसी दुनिया में आने से अच्छा है, तू मत आ।' इसी मुद्दे पर पत्रकार पूजा सिंह अपने ब्लॉग 'स्त्रीकाल' में लिखती हैं- 'दिसंबर 2012 में निर्भया सामूहिक बलात्कार कांड के बाद वर्ष 2013 में बलात्कार संबंधी कानून में बदलाव लाया गया। पहली बार कानून ने यह माना कि स्त्री के शरीर पर पूरी तरह उसका अधिकार है और उसका किसी भी प्रकार से अतिक्रमण करना उसके साथ जबरदस्ती ही माना जाएगा।' समाज में महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों की कड़े शब्दों में निंदा करने वाली महिला ब्लॉगरों में रचना त्रिपाठी, मनीषा पांडे, रचना सिंह आदि के नाम प्रमुख हैं।

हिन्दी की कुछ महिला ब्लॉगर ऐसी भी हैं, जो अपनी जिंदगी के हर क्षण को रंगीन और खुशनुमा बनाने की चाह लिए कभी पहाड़ों की ऊँची चोटियों पर पहुँच जाती हैं तो कभी अपने जीवन के सुख-दुख के जटिल गणित को सुलझाने के साथ ही फिर से नई ऊर्जा प्राप्त करने के लिए प्रकृति के सुरम्य पर्यटन स्थलों का रूख कर लेती हैं और फिर अपने जीवन के सभी तनावों को भूल मुस्कुराहट बिखेरती हुई अपनी यात्रा के अगले पड़ाव की ओर निकल पड़ती हैं। युवा ऊर्जा और जोश से लबरेज ये हिन्दी की महिला यात्रा ब्लॉगर ही है, जिनके लिए घुमक्कड़ी करना उनके शौक, जोश और जुनून से कहीं अधिक उनकी ज़िद भी है। यात्रा करने की अपनी ज़िद के चलते ये महिला ब्लॉगर देश और दुनिया के विविध स्थलों की सैर करती हुई अपने पाठकों को भी उन स्थलों की विशेषताओं से परिचित कराती है।

हिन्दी की पहली महिला यात्रा ब्लॉगर डॉ. कायनात काज़ी है। वर्ष 2012 में इस महिला ब्लॉगर ने ब्लॉग लेखन के क्षेत्र में दस्तक देते हुए लेखन की उस विधा का चयन किया, जिसमें अब तक पुरूष ब्लॉगरों का ही एकछत्र वर्चस्व था। डॉ. काज़ी एक अच्छी ब्लॉग लेखक होने के साथ ही बेहतरीन फोटोग्राफर भी है। अपने ब्लॉग 'राहगिरी' में वह पाठकों को देश और दुनिया के चुनिंदा पर्यटन स्थलों की सैर कराने के साथ ही वहाँ की यादगार तस्वीरें भी पोस्ट करती हैं। वर्तमान में कई महिलाएँ हिन्दी भाषा में ब्लॉग पर यात्रा वृत्तांत लेखन कर रही हैं। हिन्दी के प्रमुख महिला यात्रा ब्लॉगों में स्वाति का 'मेरी यात्रा', हर्षिता जोशी का 'अवर ड्रीम टेल्स', डॉ. कायनात काज़ी का 'राहगिरी', रंजू भाटिया का 'ज़िंदगीनामा', दर्शन कौर का 'मेरे अरमान, मेरे सपने', विनीता यशस्वी का 'यशस्वी' आदि ब्लॉग प्रमुख हैं।

साहित्य लेखन भी महिलाओं की प्रिय विधा रही है। हिन्दी ब्लॉग जगत में सर्वाधिक महिलाएँ लेखन की इसी विधा का प्रयोग अपनी ब्लॉग पोस्ट में करती है। अपने विचारों व कल्पनाओं के गद्य व पद्य के रूप में सुंदर शब्दों में बखूबी अभिव्यक्त करने में कुशल महिला साहित्यिक ब्लॉगरों में रश्मिप्रभा, प्रीति सुराना, शालिनी रस्तोगी, निर्मला कपिला, प्रतिभा कटियार, सुषमा वर्मा, कनुप्रिया, आशा जोगेलकर, शिखा वार्ष्णेय, रीनू तलवाड, माधवी शर्मा आदि का नाम प्रमुख है। वर्तमान में लोकप्रिय हिन्दी के साहित्यिक ब्लॉगों में मेरी भावनाएँ, डायरी के पन्नों से, मेरा मन, मेरी कलम मेरे जज्बात, आहूति, प्रतिभा की दुनिया, अनुभूति कलश, परवाज़, स्वप्नरंजिता, स्पंदन, समुद्र पार के पाखी, उसने कहा था आदि प्रमुख हैं। साहित्यिक ब्लॉगों के माध्यम से इन महिला ब्लॉगरों की रचनात्मकता को देख हर कोई मंत्रमुग्ध हो उठता है। उदाहरण के रूप में कहा जाए तो ब्लॉगर प्रीति सुराना अपने ब्लॉग 'मेरा मन' की एक पोस्ट में अपने दर्द को इस प्रकार से सुंदर व सारगर्भित शब्दों में अभिव्यक्त करती है- 'मैंने बो रखे हैं, अपने ही आसपास बबूल, जिसके काँटे बिंधते है, पल प्रतिपल मेरे मन को और याद दिलाते है, खुशबू से ललचाकर कोई लूटेरा, लूट ले जाए खुशी या फूलों की सेज पर गहरा जाए आलस्य।'

कुछ इसी प्रकार नारी जीवन के अधूरेपन को ब्लॉगर शालिनी रस्तौगी इन शब्दों में अभिव्यक्त करती हैं- 'अधूरी ही रही मैं, न कभी पूर्ण हो पाई। बादल, हवा, नदी, आकाश, धरा सब कुछ तो बनना चाहा था पर सर्वस्व न बरसा पाई। हवा बनी पर वर्जनाओं के पहाड़ न लांघे, नदी

बन बही पर जीवन के समतल में मंथर-मंथर भावों के आवेग में न किनारे तोड़ पाई।' महिलाओं द्वारा लिखे जाने वाले लोकप्रिय साहित्यिक ब्लॉगों का विस्तृत अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं ने बेहतर व गुणवत्तापूर्ण साहित्य ब्लॉग लेखन के माध्यम से प्रस्तुत किया है। आज महिला साहित्यकार हिन्दी के साथ ही आंचलिक भाषाओं में भी बेहतर साहित्यिक ब्लॉग पोस्ट लिख रही हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहना उचित होगा कि ब्लॉग लेखन के क्षेत्र में अब महिला ब्लॉगर भी पुरूष ब्लॉगरों को बराबरी की टक्कर दे रही है। आज लेखन की कोई विधा ऐसी नहीं है, जिस पर महिला ब्लॉगरों ने ब्लॉग पोस्ट न लिखी हो। ये नये दौर की हिन्दी की महिला ब्लॉगर हैं, जो खान-पान, फैशन, कला व साहित्य के साथ ही पत्रकारिता, राजनीति, फोटोग्राफी, तकनीक, समसामयिक मुद्दों आदि पर गुणवत्तापूर्ण ब्लॉग लेखन कर रही हैं।

कुल मिलाकर कहा जाए तो नारी ब्लॉग लेखन एक ओर स्वांतः सुखाय है तो दूसरी ओर बहुजन हिताय भी। विविध विषयों के साँचों में बखूबी ढ़लकर परिपक्व होती महिलाओं की लेखनी हिन्दी ब्लॉग लेखन के क्षेत्र में एक नई सोच, नया बदलाव व नई क्रांति का शुभारंभ है, जिसका अनुसरण करते हुए कई महिलाओं ने लेखन की इस नूतन विधा को अपनाया है और अपने विचारों को अभिव्यक्ति का एक नया मंच प्रदान किया है। पुरूषों के वर्चस्व वाले हिन्दी ब्लॉग जगत में महिलाओं का ब्लॉग लेखन किसी चुनौती से कम नहीं है, फिर भी अपने अदम्य साहस, प्रतिभा, स्वाभिमान व अभिव्यक्ति की सरलता तथा सहजता के चलते महिला ब्लॉगर अपने लिए सही मार्ग चुन लेखकों की भीड़ में अपनी अलग पहचान बना रही है। मौजूदा परिप्रेक्ष्य में हिन्दी ब्लॉग जगत में महिलाओं की सशक्त उपस्थिति व सक्रियता इस बात की पुख्ता परिचायक है कि चूड़ी पहनने वाले नाजुक हाथ जब लेखनी थामते हैं तो शब्द गोलाकार रोटियों की तरह स्वतः ही उन हाथों से फिसलकर सुंदर ब्लॉग पोस्ट के रूप में ढलने लग जाते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. *आरप्रभाता डॉट ब्लॉगस्पॉट डॉट कॉम*
2. *डेली न्यूज़, संडेड्रीम, लेख : की-बोर्ड वाली औरतें, दिनांक 19 फरवरी 2012*
3. *मीडॉटसाइंटिफिक वर्ल्ड डॉट इन*
4. *राजस्थान पत्रिका, परिवार परिशिष्ट, अंकः 24 दिसंबर 2008*
5. *रचनाकार डॉट ओआरजी*
6. *सोनिया गौर डॉट ब्लॉगस्पॉट डॉट इन*
7. *खबर डॉट एनडीटीवी डॉट कॉम*
8. *मेरी भावनाएँ, ब्लॉग*